B.A. PART - I
हिन्दी - (प्रतिष्ठा) प्रथम - पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास
भाग - 5

प्रश्न :- आदिकाल के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालें ?

उत्तर :- सोपभाग :-

(6) डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त का मत :-

आचार्य गणपतिचन्द्र गुप्त ने अपने ग्रंथ हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास में आदिकाल के नामकरण की समस्या पर यथार्थ दृष्टिकोण से विचार किया है, वे शुक्ल जी के वीरगाथा काल नाम को स्वीकार नहीं करते और इस सम्बन्ध में उन्हीं त्रुटियों का उल्लेख करते हैं, जो पीछे बतायी जा चुकी हैं; साथ ही वे आदिकाल नाम को भी स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं। आचार्य द्विवेदी ने इसे आदिकाल की संज्ञा प्रदान करते हुए कहा था, "यदि पाठक इस धारणा से सावधान रहें तो यह नाम बुरा नहीं है।" डॉ० गुप्त का मत है कि यहाँ प्रयुक्त शब्द "यह नाम बुरा नहीं है" से द्विवेदी जी की अर्द्धस्वीकृति ही व्यक्त होती है, आदिकाल नाम बुरा नहीं है, तो अच्छा भी नहीं है, परन्तु जब तक कोई और उचित नाम न मिल जाय तब तक इसी से काम चलायें, यही मंतव्य उक्त पंक्ति का प्रतीत होता है।

डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने इन दोनों ही नामों को अस्वीकार करते हुए लिखा है, "रचनाओं की दृष्टि से आचार्य शुक्ल की वीरगाथाकाल बिल्कुल आधारशून्य सिद्ध होता है। कुछ विद्वानों ने इस स्थिति को सुधारने के लिए इस काल के नए नामकरण आदिकाल का सुझाव दिया, किन्तु हमारे विचार से केवल नाम बदल देने मात्र से इस असंगति का निराकरण नहीं हो सकेगा।" वे आगे व्यंग्य करते हुए कहते हैं— "यदि कोई नामकरण किया ही जाना है तो आदिकाल की अपेक्षा 'शून्यकाल' नाम कहीं अधिक अच्छा रहेगा क्योंकि इससे हमारे विद्यार्थियों और शोधकर्त्ताओं के सामने यह स्थिति तो स्पष्ट हो

हो जाएगी कि रचनाओं की दृष्टि से यह शून्य है।"

आचार्य गणपतिचन्द्र गुप्त ने हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ 12 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में माना है, वे 1184 ई० से 1350 ई० तक के कालखण्ड को प्रारम्भिक काल कहते हैं। उन्होंने 7 वीं या 8 वीं शती से प्राप्त होने वाली सिद्धों, नाथों, जैनों की रचनाओं को अपभ्रंश की रचनाएँ मानकर हिन्दी से बहिष्कृत कर दिया है, परन्तु उनके इस मत को पूर्णरूपेण स्वीकार नहीं किया जा सकता। तत्कालीन भाषा में हिन्दी के तत्व किसी न किसी मात्रा में अवश्य विद्यमान थे; अतः उसकी पूर्ण उपेक्षा करना संभव नहीं है।

डॉ० गुप्त ने आदिकाल के नामकरण की समस्या को सुलझाने के सम्बन्ध में अपना निष्कर्ष देते हुए लिखा है—

"आदिकाल की समस्या को सुलझाने का एक ही मार्ग है, हम अपने वैयक्तिक पूर्वाग्रहों या दुराग्रहों को त्यागकर शुद्ध भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पहले इस बात का निर्णय करें कि हिन्दी साहित्य का उद्भव कब से होता है तथा वे कौन-कौन सी प्रामाणिक रचनाएँ हैं, जो भाषा की दृष्टि से प्रारम्भिक हिन्दी के अन्तर्गत रखी जा सकती हैं, इन्हीं रचनाओं के रचनाकाल एवं उनकी प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल की सीमा एवं नामकरण का निर्णय किया जा सकता है।"

निष्कर्ष:-

आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विभिन्न विद्वानों के मतों की समीक्षा करने के उपरांत हम यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य हैं कि वीरगाथाकाल नाम उपयुक्त नहीं है, इस काल के

लिए सर्वाधिक उपयुक्त नाम आदिकाल ही है क्योंकि एक ओर तो इस नाम में किसी एक प्रवृत्ति को प्रधानता देकर शेष को गौण मान लेने का दोष नहीं है, दूसरे यह उन सभी प्रवृत्तियों का बोधक है जो परवर्ती हिन्दी साहित्य में प्रचुरता से विकसित हुई। हिन्दी भाषा के परवर्ती विकसित रूप का आदि रूप भी इस काल की रचनाओं में उपलब्ध हो जाता है। अतः सभी दृष्टियों से 'आदिकाल' नाम ही उपयुक्त है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) प्रश्न - आदिकाल के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालते हुए यह बताइए कि इसे वीरगाथाकाल कहना कहाँ तक उचित है?

(2) प्रश्न - हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रथम कालखण्ड का उचित नामकरण कीजिए। इसे आदिकाल कहना उचित है या वीरगाथाकाल ?

(3) प्रश्न - आदिकाल के नामकरण पर विभिन्न विद्वानों के मतों को प्रस्तुत करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत की समीक्षा कीजिए। उनके द्वारा दिया गया नाम वीरगाथाकाल कहाँ तक उचित है?

(4) प्रश्न - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की काल-विभाजन पद्धति पर प्रकाश डालते हुए यह बताइए कि वीरगाथाकाल नाम उचित क्यों नहीं है?

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 10.02.2023